Morne

टिप्पणी

- त्रयोदशाह संस्कार प्रारम्भ करने के पूर्व गौर-गणेश-कलश पूजन का विधान है।
- कुछ लोग सपिण्डन के बाद उसी दिन घर आकर गौर-गणेश की पूजा करते हैं, कुछ लोग तेरही के दिन करते हैं।
- यदि तेरही के दिन करना है, तो पहले आँगन में शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व मुख बैठकर –
- अपने ऊपर जल छिड़के, आचमन करे – पैंती (पवित्री) पहने।
- फिर प्रतिज्ञा संकल्प करे –

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ ... गोत्रः ... नामाऽहम् अस्मत् पितुः ... गोत्रस्य ... नाम्नः यमराज-धर्मराज-वैतरणी संकट निवारण पूर्वक स्वर्गलोक प्राप्ति कामनया तथा च स्वगृहे शुभता सिद्धयर्थम् त्रयोदशाह संस्कारं करिष्ये, तथा च गौरी-गणपति कलशाधिष्ठित देवतादीनां पूजनं करिष्ये।

- इसके बाद स्वस्तिवाचन तथा गौर-गणेश-कलश की पूजा करे।
- फिर अक्षत पुष्प लेकर पुराण पुरुष का ध्यान करे और उसके आगे का कर्म करे।

यदि गौर-गणेश की पूजा पहले हो चुकी है, तो निम्नलिखित विधि से तेरही-संस्कार करें।

।। त्रयोदशाह विधि ।।

- यजमान नित्यकर्म से निवृत्त होकर घर के आँगन में पूर्वमुख बैठकर ❑ घी का दीपक जलावे,
- कुशा से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़के –

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

- तीन बार आचमन करे –

ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नमः। ओम् नारायणाय नमः।

- हाथ धो ले –

ओम् हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।

- पवित्री (पैंती) पहने

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत् कामः पुने तच्छकेयम्।।

❑ प्राणायाम करे : तीन बार गायत्री या राम का नाम जपे –

ओम् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा योगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।

❑ कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे –

अद्य हर ओम् विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ ... गोत्रः ... नामाऽहम्-अस्मत् पितुः ... गोत्रस्य ... नाम्नः यमराज-धर्मराज-वैतरणी संकट निवारण पूर्वक स्वर्गादि उत्तमलोक प्राप्ति कामनया तथा च स्वगृहे शुभता सिद्ध्यर्थम् त्रयोदशाह-संस्कारं करिष्ये।

❑ हाथ का कुश अक्षत जल सामने भूमि पर छोड़ दे, सामने भूमि की पूजा करे।

❑ तीन बार जल छोड़ दे, चंदन-अक्षत-फूल चढ़ा दे।

ओम् भूम्यै नमः – कहता रहे

❑ अक्षत पुष्प लेकर पुराण-पुरुष का ध्यान करे –

ओम् उदीरय पितरा जार आ भगमियक्षति हर्यतो हृत्त इष्यति।
विवक्तिः वह्निः स्वपस्यते मखस्तविष्यते असुरो वेपते मती।
यस्ते अग्ने सुमतिं मर्तो अक्षत् सहसः सूनो अति स प्र शृण्वे।
इषं दधानो वहमानो अश्वैरा स द्युमां अमवान् भूषति द्यून्।।
यो अग्निः कव्यवाहनः पितृन् यक्ष दृता वृधः प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्च पितृभ्य आ। उशन्तस्त्वा नि धी म ह्युशन्तः समिधी महि उशन्नुशत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे। यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश वो गृह मिमं पश्यन् नितरं जात वेदसम् तं हरामि पितृ यज्ञाय देवं स धर्म मिन्वात् परमे सधस्थे।

ओम् मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव गुंग रजः। मधु द्यौ रस्तु नः पिता। मधुमान् नो वनस्पतिर्मधु मां अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

❑ अक्षत-फूल सामने भूमि पर छोड़ दे।

हवन करे

- किसी पात्र में अग्नि मँगाकर सामने भूमि पर रखे ☐ अग्नि की जल-चंदन-फूल छोड़कर पूजा कर दे

ओम् अग्नये नमः – कहता रहे

- दक्षिण की ओर मुख करके : अपसव्य होकर : नीचे के मन्त्रों से आहुति दे –

ओम् यमाय नमः स्वाहा
ओम् मृत्यवे नमः स्वाहा
ओम् वैवश्वताय नमः स्वाहा
ओम् सर्वभूतक्षयाय नमः स्वाहा
ओम् दध्नाय नमः स्वाहा
ओम् परमेष्ठिने नमः स्वाहा
ओम् चित्राय नमः स्वाहा
ओम् अर्यमणे नमः स्वाहा
ओम् बर्हिषदे नमः स्वाहा

ओम् श्रृंगिणे नमः स्वाहा
ओम् अनलाय नमः स्वाहा
ओम् वैराजाय नमः स्वाहा
ओम् ऊष्मणे नमः स्वाहा
ओम् अमावसवे नमः स्वाहा
ओम् धर्मराजाय नमः स्वाहा
ओम् अन्तकाय नमः स्वाहा
ओम् कालाय नमः स्वाहा
ओम् औदुम्बराय नमः स्वाहा

ओम् नीलाय नमः स्वाहा
ओम् वृकोदराय नमः स्वाहा
ओम् चित्रगुप्ताय नमः स्वाहा
ओम् सोमाय नमः स्वाहा
ओम् पृश्निजे नमः स्वाहा
ओम् सौम्याय नमः स्वाहा
ओम् कवये नमः स्वाहा
ओम् ऋताय नमः स्वाहा
ओम् आर्त्तवाय नमः स्वाहा

ओम् पंचाब्दामाय नमः स्वाहा
ओम् दिवाकीर्तये नमः स्वाहा
ओम् उपहूताय नमः स्वाहा
ओम् पुरुकुत्साय नमः स्वाहा
ओम् कव्यवाहनाय नमः स्वाहा
ओम् अष्टकापतये नमः स्वाहा
ओम् त्रसद्दस्यवे नमः स्वाहा
ओम् सोमवन्ताय नमः स्वाहा
ओम् बह्वीकाय नमः स्वाहा

१ ओम् यमाय यम सू मथर्वभ्योऽ वतो का गुंग संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत् सरा यावि जाता मिदावत् सरा याती त्वरी मिद्वत् सरा यातिष् कद्वरीं वत् सराय विजर्जरा गुंग संवत्सराय पलिक्नी मृ भुभ्योऽ जिन सं ध गुंग साध्येभ्य-श्चर्मम्नम्।। स्वाहा।।

२ ओम् नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽ पचितिर्भसत्। आनन्दनन्दा वाण्डौ मे भगः सौभाग्यम्पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्याम् धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।। स्वाहा।।

३ ओम् परम मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देव यानात्।
चक्षुष्मते श्रृणवते ते व्रवीमि मानः प्रजा गुंग रीरिषोम्मोत वीरान्।। स्वाहा।।

४ ओम् अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणा दपानती। व्यख्यन् महिषो दिवम्।। स्वाहा।।

५ ओम् विवस्वन् नादित्यै षते सोम पीथस्तस्मिन् मत्स्व। श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदा शीर्दा दम्पती वाम मश्नुतः।। पुमान् पुत्रो जायते विन्दते व स्वधा विश्वाहा रप एधते गृहे।। स्वाहा।।

६ ओम् कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भि रग्मत समोषधीभि-रोषधीः।। स्वाहा।।

७ ओम् यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मै वा भूद्विजानतः। तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनु पश्यतः।। स्वाहा।।

८ ओम् उद्दिव गुंग स्तभा नान्त रिक्षम् पृण दृ गुंग हस्व पृथिव्यां द्युतानस् त्वा मारुतो मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्मणा। ब्रह्म वनि त्वा क्षत्र वनि रायस्पोष वनि पर्यू हामि ब्रह्म दृ गुंग ह क्षत्रं दृ गुंग ह हायुर्दृ गुंग ह प्रजां दृ गुंग ह।। स्वाहा।।

९ ओम् दधिक्राव्णो अकारिषञ्जिष्णो रश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयु गुंग षितारिषत्।। स्वाहा।।

१० ओम् नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः। तेषा गुंग सहस्त्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।। स्वाहा।।

११ ओम् परमेष्ठ्यभि धीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहता यामन्धो अच्छेतः।
सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायां पूषा सोम क्रयण्याम्।। स्वाहा।।

१२ ओम् मृगो नभी मः कुचिरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः।
सृ क गुंग स गुंग शाय पवि मिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि विमृधो नु दस्व।। स्वाहा।।

१३ ओम् चित्रं देवाना मुदगाद नीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आऽ प्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष गुंग सूर्य आत्मा जगतस् तस्थुषश्च।। स्वाहा।।

१४ ओम् अय मिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष् वीड्यः।
यमप्न वानो भृगवो विरू रुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे।। स्वाहा।।

१५ ओम् अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदः सदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्ता हवीं गुंग षि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयि गुंग सर्ववीरं दधातन।। स्वाहा।।

१६ ओम् वर्हिषदः पितर ऊत्यर्वा गिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।।
त आ गतावसा शन्त मेना था नः शं यो ररपो दधात।। स्वाहा।।

१७ ओम् उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन् त्वस्मान्।। स्वाहा।।

१८ ओम् ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्म यां उ च न प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभि र्यज्ञ गुंग सुकृतं जुषस्व।। स्वाहा।।

१९ ओम् ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो ऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः।
तेभिर्यमः स गुंग रराणो हवीं गुंग ष्यु शन्नु शद्भिः प्रतिकाम मत्तु।। स्वाहा।।

२० ओम् इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नून गुंग सुवृजनासु विक्षुः।। स्वाहा।।

२१ ओम् परेयि वांसं प्रवतो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनु पस्पशानम्।
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा दुवस्य।। स्वाहा।।

२२ ओम् यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूति रप भर्तवा उ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयु रेना जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः।। स्वाहा।।

२३ ओम् अंगिरो भिरा गहि यज्ञियेभिर्यमं वैरूपै रिह मादयस्व।
विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्य।। स्वाहा।।

२४ ओम् अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वय ँ सुमतौ यज्ञियाना मपि भद्रे सौमनसे स्याम्।। स्वाहा।।

२५ ओम् अपेत वीत वि च सर्पताताेऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन्।
अहोभि रद्भिरक्तुभिर् व्यक्तं यमो ददात्य वसा नमस्मै।। स्वाहा।।

२६ ओम् प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर् यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः।
उभा राजानः स्वधया मदन्ता यमं पश्यसि वरुणं च देवम्।। स्वाहा।।

२७ ओम् यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन।
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।। स्वाहा।।

❑ पूर्णाहुति –

ओम् असि यमो अस्या दित्यो अर्वन् नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन।
असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।। स्वाहा।।

❑ अक्षत पुष्प लेकर पिता का ध्यान करे –

ओम् उदीरता मवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयु रवृका ऋतज्ञास्ते नोऽ वन्तु पितरो हवेषु।।
अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वय गुंग सुमतौ यज्ञियाना मपि भद्रे सौमनसे स्याम्।

ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽ नू हिरे सोमपीथं वसिष्ठाः।
तेभिर्यमः स गुंग रराणो हवी गुंग शन्नु शद्भिः प्रतिकाम मत्तु।

❑ इसके बाद सव्य होकर दाहिने हाथ से आँख, कान, नाक छुये और पूर्व मुख कर ३ बार गायत्री का जप करे –

ओम् देवताभ्यो पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्य मेव नमो नमः।।

❑ इसके बाद शय्यादान अथवा वस्त्र-पात्र आदि जो वस्तु ब्राह्मण को देना है, उसका संकल्प करे।

शय्यादान विधि – शय्या का सिर पूर्व की ओर रखना चाहिए, और चारो पावा के पास ईशान कोण में घी, ❑ अग्निकोम में रोली तथा पूजा सागम्री, ❑ नैऋत्यकोण में अन्न, ❑ वायव्य कोण में जलपूर्ण घड़ा तथा शय्या के ऊपर फल-फूल-मिठाई-मेवा तथा वस्त्र-पात्र आदि जो कुछ देना हो, रख दे।

❑ शय्या की पूजा करे। तीन बार जल छिड़के तथा गन्ध अक्षत पुष्प छोड़े।

ओम् सोपकरण शय्यायै नमः। ओम् प्रमाणयै देव्यै नमः।

❑ ब्राह्मण की पूजा करे : पहले ब्राह्मण का पाँव धोवे।

ओम् नमो ब्रह्मणि देवाय गो ब्राह्मण हिताय च,
जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।

❑ माथे में तिलक लगावे –

ओम् गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।।

❑ ब्राह्मण वरण – हाथ में कुश अक्षत द्रव्य लेकर वरण करे –

संकल्प – अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः इह त्रयोदशाह दिवसे शय्यादान कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं शय्यादान प्रतिगृही तत्वेन त्वां बृणे।

❑ शय्या के ऊपर विष्णु की पूजा करे – इसके बाद शय्या के ऊपर एक पान पर सोने की प्रतिमा अथवा सुपारी रखकर विष्णु की पूजा करे।

❑ पहले फूल लेकर ध्यान करे –

ॐ इदं विष्णुं विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढ मस्य पा गुंग सुरे स्वाहा।
ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं
यज्ञ गुंग समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ।

❑ फिर जल, चन्दन, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी, दक्षिणा, द्रव्य आदि चढ़ाकर सविधि पूजन करे, और हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

ओम् शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्,
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम्,
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्,
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैक नाथम्।

❑ शय्या परिक्रमा करे –

❑ इसके बाद अक्षत पुष्प कुश जल दाहिने हाथ में लेकर शय्या तथा ब्राह्मण की परिक्रमा करे।

ओम् यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि-तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे-पदे।।

- शय्या संकल्प
- परिक्रमा के बाद कुश अक्षत पुष्प जल आदि जो हाथ में लिया हुआ है, उसे लिये हुए बाएँ हाथ से शय्या स्पर्श करे और संकल्प पढ़े –

हरिः ओम् तत्सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय अद्य हर ॐ ब्रह्मणोऽन्हि द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति मे युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तैक देशे बौद्धावतारे पुण्य क्षेत्रे मासानां मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे यथालग्नमुहूर्त योग करणान्वितायां श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तिकामः अमुक गोत्रः नामाऽहं अस्मत् पितुः अमुकगोत्रस्य अमुक नाम्नः त्रयोदशाह दिवसे समस्त पापक्षय

पूर्वकाप्सरोगण सेवायुत विमानकरणक इन्द्र पुरगमनोत्तर षष्ठि सहस्त्र वर्षाधिकरणकक्रीडन श्रीसंघ समावृत सर्वलोक-महिमत्व सदुत्तर षष्ठि योजन मण्डल राज्य भोगान्तर शिव सायुज्यावाप्तिकामनया इमां शय्यां हंसतूली प्रच्छन्नां शुभ्रगण्डोपधानिकां प्रच्छादन पटास्तृतां धान्यादियुता यथोपस्कर सहितां विष्णु दैवतां तथा च आस्तरणार्थमासनं तप्तबालुकासि कंटकित भूदुर्ग संतरणकाम इमे उपानहौ, आतप-निवारणार्थम्छत्रम्, आभरणार्थम् त्रिसूपसमनार्थम् जलपात्रं, शीतोष्णवातलज्जा संरक्षणार्थम् वस्त्रोपवस्त्रम्, सूपोदनपात्राणि एवं च फलपुष्प मिष्ठान्नादीनि आसादित वस्तूनि च अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

- यह कहकर ब्राह्मण के हाथ में कुश अक्षत दे दे और ब्राह्मण को शय्या पकड़ा देवे –
- ब्राह्मण लेकर –।। स्वस्ति।। कहे।
- सांगता – हाथ में कुश अक्षत द्रव्य जल लेकर संकल्प पढ़े –

अद्य कृतैतत् शय्यादान प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थम् इदं दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

❑ ब्राह्मण लेकर कहे – ।। ओम् स्वस्ति।।

❑ फिर यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करे –

ओम् यथा न कृष्ण शयनं शून्यं सागर जातया।
तथा शय्या पित्र्यप्यस्तु अशून्या जन्म जन्मनि।।

❑ शय्या के अभाव में धोती कपड़ा आदि जो ब्राह्मण को देना है, उसका संकल्प विधान –

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुकनामाऽहं अस्मत् पितुः अमुक नाम्नः त्रयोदशाहदिवसे यमराज धर्मराज वैतरणी संकट निवारण पूर्वक स्वर्गे-सुख संवास कामनया इमानि वस्त्रोपवस्त्रादीनि आसादित वस्तूनि च यथानाम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

❑ ब्राह्मण को सामग्री दे दे।

❑ ब्राह्मण लेकर कहे – ।। स्वस्ति।।

❑ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता का संकल्प करे –

सांगता – अद्य कृतैतत् दान प्रतिष्ठा सांगता सिद्ध्यर्थम् इदं दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

❑ ब्राह्मण लेकर कहे – ।। स्वस्ति।।

❑ पददान – १३ या १७ जो पद हों उन पर तीन बार जल छिड़के तथा गन्ध अक्षत पुष्प छोड़े – ।। मंत्र।।

।।ओम् पदेभ्यो नमः।। ओम् देय द्रव्येभ्यो नमः।।

❑ फिर हाथ में कुश अक्षत जल लेकर संकल्प करे –

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः अमुक नाम्नः त्रयोदशाह दिवसे यमराज धर्मराज वैतरणी संकट निवारणार्थम् श्रुत्यादि यथोक्त फल प्राप्त्यर्थम् च इमानि पदानि यथानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकाले दातुमहम् उत्सृजे।

❑ यह कहकर जल अक्षत पद पर छोड़ दे और हाथ जोड़कर प्रार्थना करे – पद प्रार्थना

ओम् त्रिलोकीनाथ देवेश सर्वभूत दयानिधे। पददानेन सन्तुष्ट प्रयच्छ मम बाञ्छितम्।

❑ गोदान – कुश-अक्षत-जल तथा गोनिष्क्रय द्रव्य सांगता के साथ लेकर संकल्प करे –

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः अमुक नाम्नः त्रयोदशाह दिवसे यमराज धर्मराज वैतरणी संकट निवारण पूर्वक स्वर्ग सुख संवास कामनया इदं गोनिष्क्रय भूतं द्रव्यं सांगता सहितं च गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

❑ यह कहकर ब्राह्मण के हाथ में कुश अक्षत आदि दे दे।

❑ ब्राह्मण लेकर कहे – ।। स्वस्ति।।

❑ ब्राह्मणों को खिलाने के लिये बनी सामग्री एक व्यक्ति के भोजन योग्य अपने सामने रखे और कुश, अक्षत, जल, द्रव्य लेकर संकल्प करे –

टिप्पणी – यदि १० दिन गरुड़ पुराण का पाठ होता था, तो यहीं पर (पद दान के बाद) गरुड़ पुराण पुस्तक की पूजा कथा कहने वाले ब्राह्मण की पूजा करनी चाहिए। (पूजा विधि अन्त में देखें)

अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः अमुक नाम्नः त्रयोदशाह दिवसे क्षुधा तृष्णानिवारणार्थम् स्वर्ग सुख प्राप्त्यर्थम् च इमानि भोज्यवस्तूनि सजलानि सदक्षिणानि गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

❑ गोग्रास का संकल्प – गौ, कुत्ता, कौआ के लिए कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर गौग्रास का संकल्प करे –

अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः अमुक नाम्नः त्रयोदशाह दिवसे गौ श्वान काकेभ्यो इदं गोग्रासं दातुमहमुत्सृजे।

❑ प्रार्थना – पहले हाथ जोड़कर गौ की प्रार्थना करे –

ओम् सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः।।

❑ फिर माला की तरह जनेऊ अँगौछा करके कुत्ता को हाथ जोड़े –

ओम् श्वानौ द्वौ श्याम् वत्सलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्याता मेताव हिंसकौ।।

- फिर अपसव्य होकर कौवा को हाथ जोड़े –

ओम् काकोऽसि यमदूतोऽसि वायसोऽसि महावल।
सप्तजन्म कृतं पापं बलिं भक्षतु वायस।।

- फिर सव्य होकर तीन बार जल छोड़े।
- ब्राह्मण भोजन संकल्प – कुश अक्षत जल द्रव्य लेकर ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे –

अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः अमुक नाम्नः त्रयोदशाह दिवसे शुभफलावाप्तये यथोपपन्नैः सोपकरणै रन्नैः यथा संख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये, तेभ्यो दक्षिणां च दास्यामि।

- हाथ में अक्षत-फूल लेकर पुरुष सूक्त का पाठ करे –

पुरुष सूक्त पाठ –

हरिः ओम् सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमि गुंग सर्वतस्पृत्वाऽ त्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्।
पुरुष एवेद गुंग सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उता मृतत्व स्ये शानो यदन्ने नाति रोहति।
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि।
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशना नशने अभि।
ततोविराड जायत विराजो अधिपूरुषः।
सजातोअत्य रिच्यत पश्चात् भूमि मथोपुरः।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।
तस्माद् यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा गुंग सि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।
तस्मा दश्वा अजायन्त ये के चो भयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।
तं यज्ञम्वर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्यात्रऋषयश्च ये।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखंकिमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या गुंग शुद्रोअजायत।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत।

श्रोत्रा द्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।
नाभ्याआसीदन्तरिक्ष गुंग शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँअकल्पयन्।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत।
वसन्तोऽस्यासी दाज्यङ्ग्रीष्मइध्मः शरद्धविः।
सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषम्पशुम्।
यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

- आचार्य दक्षिणा – इसके बाद आचार्य पुरोहित को दक्षिणा दे।

– अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् पितुः अमुक नाम्नः तस्य आत्मा शान्त्यर्थम् स्वर्ग

लोक फलकामनया अद्य त्रयोदशाह दिवसे संस्कार पूर्णता वाप्तये इमां दक्षिणां यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

❑ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

ओम् प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणा देव तद्विष्णुः परिपूर्णम् स्यादिति श्रुतिः।
यस्य स्मृत्या च नामोक्ता तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
सर्व परिपूर्णकामः विष्णुं स्मरेत्। श्री विष्णुः। श्री विष्णुः। श्री विष्णुः।।

❑ अन्त में पैंती उतार दे और आसन के नीचे जल छोड़कर उस जल को माथ लगावे।

❑ उठकर गौ-कुत्ता-कौआ को गोग्रास खिलावे।

❑ इसके बाद ब्राह्मण का पांव धोवे और भोजन करावे।

❑ भोजन के बाद आँगन में पूर्व की ओर मुख करके यजमान खड़ा हो, ब्राह्मणों को चन्दन या दही का तिलक लगावे। पान-दक्षिणा-पद-देवे-

❑ तिलक-अक्षत – लगाने का मंत्र –

ओम् गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।।

❑ इसके बाद पुरोहित – यजमान तथा परिवार के व्यक्तियों के माथे में तिलक लगावे –

तिलक मंत्र – ओम् आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्म कामार्थ सिद्धये।।

❑ मन्त्राक्षत – सभी ब्राह्मण यजमान को मन्त्राक्षत देवें –

ओम् मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

❑ फिर यजमान ब्राह्मणों की परिक्रमा करे –

ओम् यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे पदे।।

❑ प्रदक्षिणा के बाद ब्राह्मणों का पाँव छूकर उन्हें बिदा करे। ।। इति।।

गरुण पुराण पूजन

❑ अक्षत-फूल लेकर गरुण पुराण पुस्तक की प्रार्थना करे।

ओम् ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाज् जज्ञिरे सर्वं दिवि देवादिवश्चिताः।।
ओम् कविं पुराण मनुशासितार मणोरणीयां समनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातार मचिन्त्यरूप मादित्यवर्णम् तमसः परस्तात्।।

❑ हाथ का अक्षत-फूल पुस्तक पर चढ़ा दे और पुस्तक की पूजा कर दे।

❑ ३ बार जल, रोड़ी, चन्दन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, पान, सुपारी, दक्षिणा, वस्त्र,

उपवस्त्र आदि चढ़ा दे।

❑ हाथ में जल लेकर छोड़ दे।

❑ अनया पूजया प्रीयतां न मम – कह दे। ❑ फूल लेकर प्रार्थना करे।

ओम् पुराणं गारुड़ं पुण्यं पवित्रं पुण्यवर्धनम्।
धर्मार्थकाममोक्षाणां दायकं दुःखनाशनम्।।
उत्तमं सर्वलोकानां सर्वज्ञानोपदायकम्।
त्रिवर्ग साधनं दिव्यं शतकोटि प्रविस्तरम्।।
इदं पुराणं परमं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
नानाश्रुति समायुक्तं तस्मात्तस्मै नमोऽस्तुते।।

Home

❑ फूल पुस्तक पर चढ़ा दे और गरुड़ पुराण पाठ करने वाले ब्राह्मण की पूजा कर दे।

- ब्राह्मण को तिलक-अक्षत लगाकर माला पहना दे।
- परिवार के सभी लोग पुस्तक पर यथाशक्ति दक्षिणा चढ़ा दें।
- ब्राह्मण को १० दिन पाठ करने व कथा कहने की दक्षिणा देकर ब्राह्मण का पांव छू ले।
- कुछ लोग पुस्तक पूजन के पूर्व गरुड़ पुराण का फल श्रुति अंश का पाठ भी करते हैं। देशाचार जानना।

।।इति।।

Home

✡ मन्त्राक्षत –सभी ब्राह्मण यजमान को मन्त्राक्षत देवें –

।। मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाःसन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तव।।

✡ फिर यजमान ब्राह्मणों की परिक्रमा करें –

।। यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे पदे।।

✡ प्रदक्षिणा के बाद ब्राह्मणों को पाँव छूकर उन्हें विदा करें।

।। इति वार्षिक श्राद्ध विधि।।

Home